RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-06
June-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

प्रेमचंद की कहानियों में नारी जीवन का यथार्थ चित्रण

डॉ0 डेजी कुमारी

एम0ए0 (हिन्दी), बी0एड0 पी–एच0डी0

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 12 June 2019

Keywords
प्रेमचंद, नारी–जीवन, कफन, बूढ़ी–काकी, मंदिर, निर्वासन, नैराश्य

***Corresponding Author**
Email: dazycalling[at]gmail.com

ABSTRACT

प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कथा–क्षेत्र में एक नवीन एवं वास्तविक युग का आरंभ होता है। उन्होंने पहली बार कथा–साहित्य के क्षेत्र, स्वरूप और उद्देश्य को पहचाना ही नहीं प्रत्युत उसे भव्य समृद्धि प्रदान की, काफी ऊँचाई तक ले गए। यही कारण है कि उन्हें 'कथा–सम्राट' के रूप में भी जाना जाता है। कथा में उपन्यास और कहानी दोनों आते हैं। अतः उन्हें 'उपन्यास सम्राट' और 'कहानी सम्राट' के रूप में भी समझा जा सकता है, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

प्रेमचंद नारी जीवन के अनूठे चित्रकार थे। उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी है। इन कहानियों में नारी जीवन प्रधान कहानियों की संख्या पचास के करीब है। इन कहानियों में 'निर्वासन', 'नैराश्य', 'घासवाली', 'बूढ़ी काकी', 'बड़े घर की बेटी', 'सौत', 'सती', 'कुसुम', 'वेश्या', 'नरक का मार्ग', 'मंदिर', 'कफन', 'सोहाग का शव', 'विमाता', 'बेटों वाली विधवा', 'सुहाग की साड़ी', 'सुभागी', 'उद्धार', 'धिक्कार' आदि प्रमुख है। प्रायः सभी नारी प्रधान कहानियों में नारी पात्रों की सशक्त उपस्थिति देखी जा सकती है।

प्रेचचंद ने अपनी कहानियों में नारी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी नारियों का समाज ऐसा नहीं है, जहाँ नारियाँ सुख और सम्मान से जी सके। प्रेमचंद की कहानियों की नारियाँ त्रस्त जीवन जीने को विवश है। उनकी कहानियों में नारी जीवन की त्रासद दशा की करूण प्रतिध्वनि को तीव्रता से सुना जा सकता है। समग्रतः कहा जा सकता है कि उनकी कहानियों का नारी–जीवन उपेक्षा और यंत्रणा से परिपूर्ण हैं, अत्यंत नारकीय है, जो एक भयानक कारूणिक चित्र उपस्थित करता है।

प्रेमचंद शताब्दियों से पद्दलित, अपमानित, शोषित, पीड़ित, वंचित एवं असहाय, नारी जाति की महिमा के जबरदस्त वकील थे। नारी जीवन के एक अनूठे प्रवक्ता के रूप में नारी जीवन को कष्टरहित एवं सुखमय बनाने की उनकी प्रतिबद्धता हिन्दी नारी कथा साहित्य के इतिहास में अद्वितीय, अतुलनीय एवं अविस्मरणीय है।

प्रेमचंद के आगमन से हिन्दी कथा–क्षेत्र में एक नवीन एवं वास्तविक युग का आरंभ होता है। उन्होंने पहली बार कथा–साहित्य के क्षेत्र, स्वरूप और उद्देश्य को पहचाना ही नहीं प्रत्युत् उसे भव्य समृद्धि प्रदान की, काफी ऊँचाई तक ले गए। यही कारण है कि उन्हें ''कथा सम्राट'' के रूप में भी जाना जाता है। कथा में उपन्यास और कहानी दोनों आते हैं। अतः उन्हें 'उपन्यास सम्राट' और 'कहानी सम्राट' के रूप में भी समझा जात सकता हैं, इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं है।

यह आश्चर्यजनक संयोग है कि भारतीय पुनर्जागरण और हिन्दी उपन्यास का उद्‌भव नारी जीवन की दशा में सुधार की अपेक्षा से हुआ। राजा राममोहन राय आदि के द्वारा सती प्रथा उन्मूलन, बाल विवाह निषेध, विधवा विवाह समर्थन, स्त्री शिक्षा आदि के लिए चलाया गया आंदोलन एक सीमा में सफल हुआ। हिन्दी के प्रथम तीन उपन्यासों–1870 ई0 में पं0 गौरीदत्त रचित 'देवरानी जेठानी की कहानी', 1872 ई0 में ईश्वरी प्रसाद और कल्याण राय लिखित 'वामा शिक्षक' तथा 1877 ई0 में श्रद्धाराम फुल्लौरी कृत ''भाग्यवती'' में नारी जीवन की दशा में सुधार की अनुगुँज साफ–साफ सुनाई पड़ती हैं।

उर्दू और हिन्दी के बहुचर्चित साहित्यकार प्रेमचंद (1880–1936) ने बीसवीं शती के प्रारंभ में अपने साहित्यिक जीवन का प्रारंभ किया। प्रारंभ में नवाब राय के नाम से पत्र–पत्रिकाओं में साहित्यिक लेख लिखा करते थे। उर्दू उपन्यास और कहानियों में वे दो भिन्न विमर्शो के साथ उपस्थित हुए। उर्दू में उनके द्वारा लिखा गया पहला उपन्यास 'असरारे मआबिद' उर्फ देवस्थान रहस्य धार्मिक पाखण्ड को उजागर करता है। यह उपन्यास बनारस से छपनेवाले साप्ताहिक उर्दु अखबार 'आवाजए–खल्क' में 8 अक्टुबर 1903 ई0 से धारावाहिक रूप से छपना प्रारंभ हुआ और इसे एक अनोखा संयोग ही कहना चाहिए कि जिस 8 अक्टूबर को उनकी पहली औपन्यासिक रचना रोशनी में आई, उसी 8 अक्टूबर को तैंतीस साल बाद अंतिम औपन्यासिक रचना ''मंगलसूत्र'' के साथ उनकी आँखें दुनिया की रोशनी पर बंद हुई। ध्यातव्य है कि धनपत राय के नाम से लिखी गई एक मात्र रचना 'असरारे मआबिद' ही है। बाकी उर्दू रचनाएँ वे नवाब राय के नाम से ही कर रहे थे। उर्दू में उनकी बिल्कुल पहली कहानी 'जमाना' में प्रकाशित हुई – 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन'। खून की आखिरी बूँद जो देश की आजादी के लिए गिरे वह दुनिया का सबसे अनमोल रतन है। जाहिर है यह देशप्रेम की कहानी है। 'सोजे वतन' उनकी कहानियों का पहला संग्रह है जिसकी सभी पाँचों कहानियाँ देश प्रेम पर आधारित हैं। 'सोजे वतन' की जब्ती और नवाब राय पर

RRIJM 2015, All Rights Reserved

अंग्रेजी शासन की सख्ती के बाद 1910 के अक्टूबर–नवम्बर में प्रेमचंद नाम अस्तित्व में आया। नाम सुझानेवाले थे नवाब राय के खास अजीज दोस्त–दयानारायण निगम। प्रेमचंद नाम से लिखी गई पहली रचना थी– 'बड़े घर की बेटी' शीर्षक कहानी जो दिसम्बर 1910 ई0 के अंक में 'जमाना' में छपी थी। यह मशहूर कहानी नारी जीवन की सही तस्वीर पेश करती है। बड़े घर की बेटी हुई तो अपने घर में, ससुराल में उसकी हैसियत इतनी है कि देवर तक उसका सम्मान नहीं करता, व्यंग्य–बाण से वेधता है और खड़ाऊँ से वार करता हैं। घर में इस अत्याचार के विरोध में कोई कुछ नहीं बोलता। हिन्दी कहानी और उपन्यास दोनों में प्रेमचंद नारी जीवन की यथार्थ तस्वीर को लेकर उपस्थित हुए। हिन्दी में प्रकाशित उनकी पहली कहानी ''सौत'' (दिसम्बर 1915, सरस्वती) और हिन्दी में प्रकाशित उनका पहला उपन्यास ''सेवासदन'' (अगस्त 1919, कलकत्ते में मुद्रित) के केन्द्र में नारी जीवन ही है। हिन्दी साहित्य में नारी विमर्श को सबसे पहले लानेवाले प्रेमचंद ही थे।

प्रेमचंद नारी जीवन के अनूठे चित्रकार थे। उन्होंने लगभग तीन सौ कहानियाँ लिखी है। इन कहानियों में नारी जीवन प्रधान कहानियों की संख्या पचास के करीब है। इन कहानियों में 'निर्वासन', 'नैराश्य', 'घासवाली', 'बूढ़ी काकी', 'बड़े घर की बेटी', 'सौत', 'सती', 'कुसुम', 'वेश्या', 'नरक का मार्ग', 'मंदिर', 'कफन', 'सोहाग का शव', 'विमाता', 'बेटों वाली विधवा', 'सुहाग की साड़ी', 'सुभागी', 'उद्धार', 'धिक्कार' आदि प्रमुख है। प्रायः सभी नारी प्रधान कहानियों में नारी पात्रों की सशक्त उपस्थिति देखी जा सकती है।

प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में नारी जीवन का यथार्थ चित्रण किया है। उनकी नारियों का समाज ऐसा नहीं है, जहाँ नारियाँ सुख और सम्मान से जी सके। प्रेमचंद की कहानियों की नारियों त्रस्त जीवन जीने को विवश है। उनकी कहानियों में नारी जीवन की त्रासद दशा की करूण प्रतिध्वनि को तीव्रता से सुना जा सकता है। समग्रतः कहा जा सकता है कि उनकी कहानियों का नारी–जीवन उपेक्षा और यंत्रणा से परिपूर्ण हैं, अत्यंत नारकीय है, जो एक भयानक कारूणिक चित्र उपस्थित करता है।

प्रेमचंद की कहानियों के समाज में नारी वस्तु समझी जाती थी–वस्तु जिसका मनमाना उपयोग किया जा सके। वह हाड़–मांस का बना हुआ सचेतन प्राणी नहीं समझी जाती थी। उसके हृदय, उसकी संवेदना का कोई मूल्य न था। समाज का रवैया उसके प्रति बिल्कुल कठोर था और संकीर्ण विचारों से भूरपूर था।

'निर्वासन' कहानी की नायिका मर्यादा का इतना ही कसूर था कि वह मेले की भीड़ में अपने पति परशुराम से बिछुड़ गई और कई दिनों बाद तब घर आई जब मेला प्रबंध समिति के सदस्य उसे उसके घर छोड़ आए। परशुराम जितना कट्टर ब्राह्मण था, उससे कहीं अधिक शंकालु और घृणावादी था। उसने अपनी पत्नी मर्यादा को घर में प्रवेश करने नहीं दिया और उसपर पथ भ्रष्टता अथवा चरित्र हीनता का आरोप लगाकर घर से निकाल दिया। यहाँ तक कि अंतिम समय में एक पल को उसे अपने पुत्र वासुदेव से भी मिलने नहीं दिया गया। मर्यादा स्वयं को विधवा और बाँझ समझकर भाग्य भरोसे निर्वासिता हो गई। कट्टर परशुराम ने तनिक भी नहीं सोचा कि कहाँ जाएगी? कैसे रहेगी? वह सचमुच हृदयहीन था। उस समय का समाज नारी के प्रति निर्मम था।

मंदिर कहानी की विधवा चमारिन सुखिया का इकलौता बेटा जियावन ऐसा बीमार पड़ा कि बचने की कोई आशा न रही। उसकी आस्था कह रही थी कि ठाकुरजी के पूजापूर्वक चरण स्पर्श से जियावन स्वस्थ हो जाएगा। शाम से दस बजे रात तक सुखिया को किसी ने मंदिर में घुसने नहीं दिया। पुजारी ने एक रूपये में जंतर दिया। जिसे पहनाकर भी जियावन की तबीयत ठीक होने के बदले बिगड़ती गई। जाड़े की सुबह तीन बजे सुखिया मंदिर पहुँची। उसने ईंट से मंदिर का ताला तोड़ दिया। खट्–खट् की आवाज सुनकर पुजारी ने 'चोर–चोर' का हल्ला कर दिया। सुखिया अभी मंदिर घुसने भी न पाई थी कि पुजारी ने हल्ला सुनकर आए लोगों से कह दिया कि सुखिया मंदिर में जाकर ठाकुर जी को भ्रष्ट कर आई।

फिर क्या था ? सुखिया पर लातों और घूंसों की वर्षा होने लगी। एक बलिष्ट ठाकुर ने जियावन को इतनी जोर से धक्का दिया कि बालक सुखिया के हाथ से छुटकर जमीन पर आ गिरा और मर गया। सुख्यिा भी बेटे को मृत पाकर मुर्च्छित होकर ऐसी गिरी कि उसके भी प्राण–पखेरू उड़ गए।

जयशंकर प्रसाद ने इसी विषय पर एक कहानी लिखी है – 'विराम चिह्न'। दलित युवक राधे अपने साथियों सहित मंदिर में प्रवेश करना चाहता है। वहाँ वह कट्टरपंथियों की लाठियों से आहत होकर मर जाता है। उसकी बूढ़ी माँ आक्रोश से भर उठती है। वह राधे की लाश को गोद में लिए मंदिर की ओर बढ़ती है। किन्तु उसकी आँखों की पुतलियों में जो मूर्तिभंजक छायाचित्र था, वही गलकर बहने लगता है। बुढ़िया राधे के शव देहली के समीप रख देती है। देहली पर सिर झुकाती हैय फिर उठ नहीं पाती। उसी अवस्था में मर जाती है। उसका मृत शरीर मंदिर में घुसनेवाले अछूतों के आगे विराम चिन्ह सा पड़ा था। सर्वोच्च न्यायालय के आदेश के बावजूद कट्टरपंथी महिलाओं को मंदिर–प्रवेश से रोक रहे है।

'मंदिर' और 'विराम चिन्ह' सौ साल पहले की रचनाएँ हैं। इक्कीसवीं सदी के विज्ञान, कम्प्यूटर और अंतरिक्ष के इस युग में भी हम अंधविश्वासी और चरम कट्टर बने हुए हैं।

'मंदिर' कहानी की सुखिया मर जाती हे। किन्तु, उसके प्रश्न अभी भी ज्वलन्त हैं – तो क्या भगवान ने चमारों को

RRIJM 2015, All Rights Reserved

नहीं सिरजा हैं ? चमारों का भगवान कोई और है ? वास्तव में, मंदिर मस्जिद के प्रति प्रगतिवादियों को प्रेमचंदीय संकल्प दुहराने की आवश्यकता है।

'नैराश्य' की निरूपमा को बार–बार लड़की ही पैदा होती थी, तो इसमें उसका क्या कसूर था? यहाँ तक कि उसके अपने पिता, सास, पति सब–के–सब निरूपमा को कोसतेय उसकी अशुभ कोख को कोसते। और जब इस बार भी उसकी लड़को ही हुई तो मारे निराशा के उसके हृदय की धड़कन ही बंद हो गई। निरूपमा मर गई।

प्रेमचंद की कहानियों की नारियों का जीवन यातना से कराहता नजर आता है।

'बूढ़ी काकी' प्रेमचंद की कहानियों में नारी जीवन की व्यथा का करूण चित्रण की दृष्टि से अद्वितीय है। 'पंच–परमेश्वर' शीर्षक कहानी की पृष्ठभूमि भी वही है जो 'बूढ़ी काकी' की कहानी की है। बुढ़िया खाला और बूढ़ी काकी दोनों आर्थिक धांधली की शिकार होती है। खाला की कमर झुक आई थीए दंतविहीन मुँह पोपला हो गया था। किन्तु, लाठी लेकर चल सकती थी। सो उसने पंचायत बुला ली, फैसला करा लिया। पर, बूढ़ी काकी में अब वह साहस नहीं थी। दोनों हथेलियों को जमीन पर टिकाकर कमर घसीटकर चलती थी। उसके भतीजे–पतोहू का परिवार उसी की जायदाद की कमाई पर माल पुआ उड़ा रहा था और उसी बूढ़ी काकी को खाने के लाले पड़े हुए थे। भोज का ऐसा आयोजन और काकी की ऐसी बुभुक्षा। मुंशीजी ने काकी के अरमानों की चाशनी में लपेटकर और वृद्धावस्था की मनोवैज्ञानिकता में पकाकर ऐसी अनमोल कहानी गढ़ी है कि उसका कोई उत्तर नहीं है।

आज स्थिति और भी भयावह हो उठी है। पति मारते–मारते पत्नी को घर से निकाल देता है। कोई–कोई तो जान से ही मार देता है। अच्छे खाते–पीते अफसरों की बूढ़ी माँएँ और बूढ़े पिताजी वृद्धाश्रम में दीनता के आँसू बहा रहे हैं। वे उन हाथों को देखते हैं जिनसे अपने बेटों को बड़े लाड़–प्यार से पाला था और फिर वृद्धाश्रम की एकाकी जिंदगी को देखते हैं और अपने दुर्भाग्य पर आठ–आठ आँसू बहाते हैं।

'घासवाली' मुलिया को ठाकुर खिलौने की तरह इस्तेमाल करना चाहता था। लेकिन, मुलिया के तर्कपूर्ण आक्रोश से ठिहक गया।

प्रेमचंद की कहानियों की नारी पर–पुरूष की छाया पड़ने मात्र से कलंकिनी हो जाती है और उसे घर निकाले की सजा मिलती है। लड़की को यदि कोई किसी लड़के से प्यार करते सुबह में देख लें तो शाम में उस लड़के की हत्या तय है और उस लड़की को दुर्गति से भी कोई बचा नहीं सकता।

प्रेमचंद की कहानियों की नारियाँ त्रस्त जीवन जीने को विवश हैं।

'सुभागी' कहानी की विधवा पिता के घर जाकर रहती हैं, लेकिन वहाँ उसके भई–भौजाइयों से उसकी नहीं पटती। पिता के साथ वह खेती के काम में हाथ बँटाती है और उसका कर्ज भी चुका देती है। उसे कमाते देखकर कुछ लोग उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट करते हैं और अंत में वह विवाह कर भी लेती है। इस तरह विधवा–विवाह की समस्या का समाधान बहुत कम कहानियों में मिलेगा।

विधवाओं के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति है। उनके प्रति समाज का अन्याय उनहें असहनीय मालूम पड़ता है। वह उनके सात खून माफ करने के लिए भी तैयार रहते हैं। 'बालक' कहानी की विधवा गोमती तीन–चार ब्याही जाने पर भी पति को छोड़कर भाग जाती है। विधवाश्रम से निकाली जाकर वह एक कोठरी लेकर रहने लगती है, जहाँ से गंगा ब्राह्मण उसका उद्धार करते हैं। फिर वह गंगू को भी छोड़कर भाग जाती है। अस्पताल में उसके बच्चा होता है और गंगू उसे बच्चे सहित अपने घर ले आते हैं।

दूसरे कहानीकारों की अपेक्षा प्रेमचंद की कहानियों में कर्कशा स्त्रियों की संख्या बहुत कम हैं। इसका कारण यह है कि वह स्त्री की पराधीनता समझते थे और उससे उन्हें सच्ची सहानुभूमि थी।

'मृतक भोज' – जैसी कहानियों में प्रेमचंद ने समाज में प्रचलित कुरीतियों की धज्जियाँ उड़ाई है और दिखलाया है कि इनसे साधारण लोगों को कितना नुकसान होता है। साथ ही धार्मिक अंधविश्वासों से पंडे–पुराहित किस तरह लाभ उठाते हैं, यह भी वह अच्छी तरह स्पष्ट कर देते हैं।

'उद्धार' कहानी में दहेज–प्रथा का विरोध किया गया है, जिससे लड़की के माता–पिता का जीवन संकटमय हो जाता है। वे बेचारे विवश होकर लड़की की शादी ऐसे व्यक्ति से करने को तैयार हो जाते है, जो तपेदिक का मरीज है। लड़का शादी से पहले गायब हो जाता है और आत्महत्या कर लेता है। ''नैराश्य'' में लड़कों की अपेक्षा लड़कियों को तरजीह दिये जाने की भावना का तीव्र विरोध है। 'कायर' में व्यंग के साथ ऐसे युवक का चित्रण है जो एक लड़की से प्रेम करता है और छोड़ देता है। 'धिक्कार' और 'आधार' विधवा–जीवन का कहानियाँ हैं। 'शान्ति' में भारतीय नारियों के विलायती बनते जाने का विरोध है। इस कहानी में एक मध्य वर्ग का पति अपनी पत्नी को अंग्रेजी ढंग अपनाने के लिए उकसाता है। वह अहंवादी और हठी हो जाती है और त्याग के परम्परागत आदर्शो को भूल जाती है। यद्यपि चरित्र ठीक उतरा है, तथापित कहानी में प्रमुखता विचार की है।

'कफन' नामक कहानी, जो विश्व की श्रेष्ठतम कहानियों में गिनी जा सकती है, नारी जीवन की त्रासद की कहानी है। उनके जीवन की एक भावना के चित्रण और वर्णन की कला की दृष्टि से यह अद्वितीय है। घीसू एक व्यक्ति–मात्र नहीं है, वह समाज से बहिष्कृतों का प्रतिनिधि है, जिसका पीड़ित जीवन उसे भाग्यवादी, कठोर ओर जीवन के दुखों की ओर से

उदासीन बना बना देता है। उसका लड़का माधव उसका सच्च प्रतिरूप है। वे दोनों आलसी हैं। वे बाहर न जाने के लिए आलू और मटर चुराते हैं। वे हाथ से बहुत कम काम करते हैं। अपने व्यक्तित्व के लिए संघर्ष का उनके लिए कोई मूल्य नहीं है। वे नैतिक दृष्टि से बिल्कुल गिर गए हैं। वे देख चुके हैं कि किसान घोर श्रम करता है पर उसे कुछ भी नहीं मिलता, जबकि अमीर आदमी कुछ नहीं करता और सब कुछ पा लेता है। उन्होंने अनुभव किया है कि भूखों ही मरेंगें और यदि वे भूखों हीं मरेंगें तो वे क्यों अपने हाड़ पेलें। अन्त में वे यह सोचकर सन्तोष कर लेते है कि कोई उनका शोषण नहीं कर रहा। जीवन के प्रति इसी दृष्टिकोण के कारण वे काहिल, निश्चिन्त और लापरवाह, पशु और हृदयहीन बन जाते हैं।

माधव की पत्नी उन सबको खिलाने का भार लेती है। बुधिया ने परिवार को सम्पन्न बना दिया है। कहानी का आरम्भ उसकी प्रसव–पीड़ा से होता है। घीसू और माधव उसके पास नहीं जाते। उनमें से प्रत्येक यह समझता है कि भुनते हुए आलुओं के पास जो भी उनमें से रहेगा, अधिक खा जायेगा। यह भाग्य की विडम्बना है कि जो स्त्री घर में समृद्धि लाई वही प्रसव की वेदना से छटपटाकर मर जाती है और इन दोनों में से कोई उसके पास नहीं आता। घीसू अंतिम संस्कार के लिए पैसे इकट्ठे करता है। उनके पास उसके शव को जलाने के लिए पर्याप्त लकड़ी है। जरूरत है एक कफन की, लेकिन जिस समय वह जलाई जायगी उस समय बिलकुल अंधेरा होगा और कोई कफन की और न देखेगा। जिसको तन ढकने के लिए जीवन–भर चिथड़े भी नसीब न हुए उसको मरने पर नया कफन मिले यह उसका उपहास करना होगा। माधव कहता है कि वह तो शव के साथ ही जला दिया जायेगा। वे एक ताड़ीखाने के सामने पहुँचते हैं। वे उसमें शराब पीते हैं। घीसू अत्यधिक प्रसन्नता का अनुभव करता है और कहता है– ''हमारी आत्मा प्रसन्न हो रही है तो क्या उसे पुन्न न होगा?'' माधव भी समर्थन करता है– ''जरूर–जरूर होगा। भगवान्! तुम अनतरजामी हो। उसे बैकुण्ठ ले जाना। हम दोनों हृदय से आसीरवाद दे रहे हैं। आज जो भोजन मिला है, वह कभी उमर भर न मिला था।''

प्रेमचन्द ने माधव का चरित्र एक सफल चित्रकार की भाँति बड़ी कुशलता से चित्रित किया है। यह उनकी अमर कृति है। अकेली 'कफन' कहानी उन्हें श्रेष्ठतम लेखकों की श्रेणी में पहुँचा देती है। यह शक्तिशाली कहानी है, जो क्रूर व्यंग्य और सात्विक क्रोध से पूर्ण हैं। लेखक कहता है कि इस प्रसंग में कोई ऐसी अनहोनी बात नहीं थी क्योंकि यह एक ऐसे समाज की बात हैं, जहाँ अधिकांश व्यक्तियों का जीवन इन व्यक्तियों जैसा ही बीतता हैं, जहाँ धूर्त और बेईमान लोग गरीबों के श्रम पर मोटे होते रहते हैं।

प्रो0 गोपाल राय अपने ''हिन्दी उपन्यास का इतिहास'' में कहते हैं कि प्रेमचंद का नारी विषयक विज़न अंतर्विरोधों से ग्रस्त एवं धुंधला है। (पृ0 137, संस्करण 2016, राजकमल)

वस्तुतः यह संदर्भ से काटकर किया गया मूल्यांकन है जो उचित नहीं हैं। अपनी कालगत और परिवेशगत सीमा में प्रेमचंद कहानी की नारियाँ यथार्थ रूप से चित्रित हुई हैं। उनके जीवन में संघर्ष है। यह संघर्ष उनकी उपेक्षा और उनपर होने वाले अमानुषिक अत्याचार से और सघन और कारूणिक से उठता है।

प्रेमचंद शताब्दियों से पद्दलित, अपमानित, शोषित, पीड़ित, वंचित एवं असहाय नारी जाति की महिमा के जबरदस्त वकील थे। एक अनूठे प्रवक्ता के रूप में नारी जीवन को कष्टरहित एवं सुखमय बनाने की उनकी प्रतिबद्धता हिन्दी नारी कथा साहित्य के इतिहास में अद्वितीय, अतुलनीय एवं अविस्मरणीय हैं।

References

1. हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास–द्वितीय खण्ड : गणपति चन्द्र गुप्त
2. कहानीकार प्रेमचंद रचना दृष्टि और रचना शिल्प : शिवकुमार मिश्र
3. हिन्दी कहानी का विकास : मधुरेश
4. हिन्दी साहित्य का इतिहास : विजयेन्द्र स्नातक
5. प्रेमचंद घर में : शिवरानी देवी प्रेमचंद
6. हिन्दी–कहानी के सौ वर्ष : डॉ0 दीनानाथ सिंह
7. हजारी प्रसाद द्विवेदी ग्रन्थावली 10
8. हिन्दी का गद्य–साहित्य : डॉ0 रामचन्द्र तिवारी
9. हिन्दी साहित्य का इतिहास : (सं) डॉ0 नगेन्द्र : मयूर पेपर बैक्स, नोएडा–2007
10. प्रेमचंद की हिन्दी–उर्दू कहानियाँ : (सं0) डॉ0 कमल किशोर गोयनका : प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली : 2017
11. प्रेमचंद : कमल का सिपाही : अमृतराय : हंस प्रकाशन, इलाहाबाद : 1992
12. मानसरोवर खण्ड–1 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010
13. मानसरोवर खण्ड–2 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010
14. मानसरोवर खण्ड–3 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010
15. मानसरोवर खण्ड–4 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010
16. मानसरोवर खण्ड–5 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010
17. मानसरोवर खण्ड–6 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010

RRIJM 2015, All Rights Reserved

18. मानसरोवर खण्ड–7 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010
19. मानसरोवर खण्ड–8 : प्रेमचंद : प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली : 2010
20. हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास : डॉ0 बच्चन सिंह : राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली : 2017
21. आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास : डॉ0 बच्चन सिंह : लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद : 2016